Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 2, February-2019, ISSN 2230-7540

सभ्यता, संस्कृति और पॉपुलर संस्कृति का अंतर्संबंध

Dr. Naveen Raman*

Ph.D. in Hindi

सार – ***'पश्चिमी सभ्यता' शब्द का प्रयोग होने के साथ ही संस्कृति को दो अलग-अलग रूपों में अलगाने की प्रक्रिया शुरू हो गयी। एक उनकी संस्कृति जिनके हाथ में सत्ता है और दूसरे वे लोग जिनके हाथों में सत्ता की कोई ताक़त नहीं है। जिनके हाथ में सत्ता रही उनके विश्वासों को, मान्यताओं को, रूचियों और जीवन शैली को कैपिटल सी 'C' के तहत विश्लेषित किया गया। संस्कृति के इस रूप को सामाजिक चिह्नों के तौर पर स्थापित करने की कोशिश की गयी। इसके माध्यम से यह साबित करने की कोशिश की गयी कि जो व्यक्ति सुसंस्कृत होगा, उसे कौन सी किताबें बेहतर हैं, किस तरह के कपड़े पहनने चाहिए, पूजा-प्रार्थना करने की कौन-सी पद्धति होती है, सामाजिक जलसों में किस तरह से व्यवहार करने चाहिए आदि बातों की समझ होगी। यह वही सामाजिक चिह्न हैं जिसे कि पेयरि बौद्रिंआ ने कल्चरल कैपिटल (Cultural Capital) यानी सांस्कृतिक पूँजी कहा।***

----------X----------

यह जिसके पास है वह अन्य लोगों से अलग समझा जाता है। बाकी के लोग 'मास' या भीड़ के हिस्से भर हैं। ये नहीं जानते कि जो सामाजिक चिह्न प्रतिपादित किये गये हैं, उसे किस तरह से अपने जीवन व्यवहार में लाएँ। ऐसी स्थिति में वे स्वयं द्वारा निर्धारित शैली और जीवन जीने के तरीक़े को व्यवहार में लाते रहे। लेकिन इनके द्वारा गढ़े गये सामाजिक चिह्नों को वह महत्त्व और ताक़त नहीं मिली जितना कि सत्ता द्वारा निर्धारित चिह्नों को मिल पायी।[1] आगे वीवर का मानना है कि बीसवीं सदी में संस्कृति के इस रूप को चुनौती मिलनी शुरू हो गयी। सत्ता द्वारा पहले जिस संस्कृति को स्थापित किया गया था वो अभिजात्य या परम्परा रूप में अभी भी मौजूद रहे लेकिन संस्कृति के संदर्भ में इसका प्रभाव बहुत सीमित होने लगा। अब ऐसा नहीं रह गया कि संस्कृति के रूप में सिर्फ़ इनके ही सामाजिक चिह्नों पर विचार किये जाएँ, न तो परिभाषित करने के स्तर पर और न ही प्रभाव के स्तर पर। संस्कृति को परिभाषित करने में पॉपुलर संस्कृति की पकड़ मजबूत हुई और इसने स्पष्ट करने की कोशिश की कि कैसे संस्कृति को अब तक की परिभाषाओं से बिल्कुल अलग रूप में देखा-समझा जा सकता है।

वीवर जब संस्कृति के शुरुआती अवधारणाओं की चर्चा कर रहे होते हैं तब इसके निर्धारण में सत्ता की बड़ी भूमिका को स्पष्ट करते हैं। वीवर के अनुसार उनकी यह भूमिका इतनी प्रभावी होती है कि इनके द्वारा तय किये गये नियामकों से बाहर कुछ भी संस्कृति का हिस्सा नहीं है। हालाँकि बाद में सत्ता के अनुरूप बनने वाली संस्कृति के विकास क्रम में वे इससे अलग भी बनने वाली संस्कृति की बात करते हैं। पॉपुलर संस्कृति का विश्लेषण इसका बड़ा प्रमाण है जहाँ उन्होंने सत्ता का सीधे-सीधे हस्तक्षेप न होने के वाबजूद भी एक नयी संस्कृति के प्रभावी होने और सत्ता द्वारा निर्मित संस्कृति को अपदस्थ होने की बात करते हैं। इन सबों के अलावे संस्कृति समीक्षकों का एक बड़ा वर्ग ऐसा भी है जो संस्कृति और सत्ता के बजाय किसी एक काल-खंड या शुरुआती दौर में देखने के बदलती संस्कृति के साथ-साथ सत्ता की बदलती भूमिका और उनके प्रभावों की चर्चा करते हैं। इस वर्ग के आलोचकों ने यह स्पष्ट किया कि संस्कृति की चर्चा चाहे जिस रूप में हो, जिस किसी भी काल-खंड की हो, सत्ता से जोड़कर देखे बिना इसका विश्लेषण किया जाना संभव नहीं है।

इस संबंध में जॉन स्टोरे का मानना है कि जैसे ही संस्कृतिमूलक अध्ययन की बात करते हैं, हम संस्कृति और सत्ता के बीच के अंतर्संबंधों को विश्लेषित करने के प्रयास में होते हैं। संस्कृतिमूलक अध्ययन पद्धति की विशेषता ही यही है कि वह संस्कृति को सत्ता के निर्णयों से जोड़कर देखे। इसलिए इस संदर्भ में ग्राम्शी द्वारा प्रतिपादित 'वर्चस्व की संस्कृति'(culture of hegemony) की जो अवधारणा है, संस्कृति विश्लेषण के लिए बेहतर मानता हूँ और इस अवधारणा का समर्थन करता हूँ। इस लिहाज़ से अगर आप संस्कृति का विश्लेषण करते हैं तो यह किसी ख़ास विचारधारा

www.ignited.in

को, ख़ास राजनीति को बार-बार स्पषट, अस्पष्ट और पुनःस्पष्ट करने का माध्यम जान पड़ता है।[2] स्टोरे की इस मान्यता पर विचार करें तो सत्ता जिस संस्कृति का निर्धारण करती है उसे बार-बार अपने तरीक़े से और स्पष्ट बनाने की कोशिश करती है ताकि इसे स्वीकार करने के पीछे के तर्क को मजबूती मिल सके जबकि सच बात यह है कि अर्थ अनिवार्यतः एक सामाजिक उत्पाद है, एक मानवीय अभ्यास है। इस मानवीय अभ्यास में वे लोग भी शामिल हैं जो कि सत्ता से जुड़े है और वे भी शामिल हैं जो सत्ता के बाहर हैं। इसलिए संस्कृतिमूलक अध्ययन के तहत जब संस्कृति का विश्लेषण किया जाता है तब इन दोनों के अभ्यासों और प्रयासों पर बात की जानी चाहिए। इसलिए वीवर की तरह जॉन स्टोरे भी संस्कृति के इन दोनों रूपों की चर्चा करते हैं। बल्कि पॉपुलर संस्कृति की व्याख्या करने के क्रम में वे सामाजिक सत्ता को ख़ास महत्त्व देते हुए स्पष्ट करते हैं कि वर्ग, लिंग, नैतिकता, नस्ल और पीढ़ी के अनुरूप संस्कृति और पॉपुलर संस्कृति की व्याख्या करना अनिवार्य है। संस्कृति के जिस रूप को लेकर आलोचकों ने कोसना शुरू किया है उसमें साधारण व्यक्ति के हस्तक्षेप को समझना दिलचस्प है। इसलिए पॉपुलर संस्कृति की चाहे जो भी और जैसी भी व्याख्या हो, उसमें एक बात सामान्य है और होनी चाहिए कि 'पॉपुलर' जो विचार है उसका सीधा संबंध लोगों से है, किसी ख़ास समुदाय या वर्ग से नहीं।[3] स्टोरे की इस अवधारणा पर विचार करें तो पॉपुलर संस्कृति का व्यापक संदर्भ खुलकर सामने आता है। इस संदर्भ में डॉमिनिक स्ट्रीनॉती की मान्यता भी स्टोरे से बहुत अलग नहीं है। स्ट्रीनॉती का मानना है कि पॉपुलर संस्कृति की उपस्थिति समाज के अलग-अलग हिस्सों में, समाज के अलग-अलग समूहों में और अलग-अलग ऐतिहासिक काल-खंडों में संभव है।[4] इसके बावजूद क्या पॉपुलर संस्कृति को ऐतिहासिक विकासक्रम के तौर पर ही विश्लेषित किया जाना चाहिए या फिर इसका संबंध कुछ ख़ास तरह के उत्पादों, संगीत, साहित्य, जीवनशैली और बदलावों से भी है।

इस प्रकार संस्कृति की ऐतिहासिकता, बदलती जीवनशैली और वस्तु आधारित समाज की निर्मिति को ध्यान में रखते हुए पॉपुलर संस्कृति के विश्वेषण का जो क्रम शुरू हुआ वो मुख्यतः तीन-चार सवालों को उठाने और उसके जबाब खोजने की लगातार कोशिश है। पॉपुलर संस्कृति के संबंध में अलग-अलग तर्कों पर विचार करने के पहले इन सवालों से गुज़रना ज़रूरी होगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. Since the advent of the term "western civilization", there has been an attempt to distinguish between the culture of those with power and those without it. For those in power, their beliefs, morals, and tastes were sanctioned as the right forms of culture or signified as Culture with a capital "C". This culture represented a set of social codes in which those people who were cultured knew the right books to read, the proper forms of dress, the holiest way to worship a god, the correct modes of speech, and the proper culinary tastes. It was these codes, or what Pierre Bourdieu calls Cultural Capital, that marked their possessors as privileged from other people. The people, often referred to condescendingly as the" masses", who did not understand or share these sanctioned values possessed their own social codes, but these codes did not have the same power and therefore the same weight in society to persuade or influence opinions. जॉन ए वीवर(2005), पॉपुलर कल्चर प्राइमर, पेज न-01, पीटर लांग पब्लिशिंग, न्यूयार्क, 275 सेवेंथ एवन्यू, 28 वां तल, न्यूयार्क,10001

2. The version of cultural studies I advocate here is Gransian. From this perspective, the cultural field is marked by a struggle to articulate, disarticulate, and rearticulate particular meanings, particular ideologies, particular politics. जॉन स्टोरे (2003) इन्वेंटिंग पॉपुलर कल्चर फ्रॉम फोक्लॉर टू ग्लोबलाइजेशन, पेज नं-(xi), ब्लैकबेल पब्लिशिंग

3. वही पेज न-xii

4. Popular culture can be found in different societies, and among societies and groups in different historical periods. डॉमिनिक स्ट्रीनॉती (2006), एन इन्ट्रोडक्शन टू दि थ्योरिज ऑफ़ पॉपुलर कल्चर,पेज नंXvii, राउटलेज 270 मेडिसन एवन्यू,न्यू ऑर्क, 10016

Corresponding Author

Dr. Naveen Raman*

Ph.D. in Hindi

naveen21.com@gmail.com

www.ignited.in